

अंसेपाद् (ámse-pād) *adj.* (an animal) possessed of a foot on its shoulder अंसेपाच्छुण्डोऽभिरूढाकर्णो वा दक्षिणा MaiS. ii. 6. 13; त्वाष्ट्रमंसेपाद-मालभेत...मिथुनो वा एष योऽसेपात्त्वष्ट्रा मिथुनस्य प्रजनयिता KāthS. 13. 6.

अंसेभार (ámse-bhāra) *m.* burden on the shoulder भ्रूया...अंसेभार अंसेभार...GaṇPā. 169. 7 (P. iv. 4. 16); ठइ भ्रूयादेः।...भ्रूया हरति भ्रूयाः।...अंसेभार । JaineVyā. 212. 26 (on iii. 3. 139); KāśiVr. (on P. iv. 4. 16); भ्रूया...अंसेभार इति भ्रूयादिः ŚākaṭāVyā. iii. 2. 15; प्रोक्ता भ्रूया...अंसेभारः GaṇRa. 6. 379 (406); Prasā. i. 825. 3.

[**अंसेभारिक** (ámse-bhārika) *m.* [f. -i] a person bearing a burden on the shoulder भ्रूया...अंसेभार अंसेभार GaṇPā. 169. 7; GaṇRa. 6. 379(406)]

अंसेसुनाभायुध (ámse-sunābhāyudha) *adj.* one who has on his shoulder the discus-weaponed (Viṣṇu) ये संयुगेऽचक्षत तार्क्ष्यपुत्रमंसेसुनाभायुधमापतन्तम् BhāgP. iii. 2. 24.

अंसोच्चल (ámsoccala) *m.* shoulder-blade, top of the shoulder (पशुं समनक्ति) सं ते प्राणो वायुना गच्छतामिति शिरसि । सं यत्रैरङ्गानीत्यंसोच्चलयोः ĀpaSS. viii. 14. 2. (comm. अंसकोटयोः)

अंसोच्चार (ámsoccāra) *m.* shoulder-blade, top of the shoulder (पशुं समनक्ति) सं ते प्राण इति दक्षिणेऽर्धशिरसि सं यत्रैरङ्गानीत्यंसोच्चारे HirS. iv. 3. 10.

अंसोत्सेध (ámsoṭsedha) *m.* protuberance or elevation of shoulders अंसोत्सेधेन सोत्सेकस्त्रिभुव इव केशवः RāghPāp.(Dha.) 18. 25.

अंसोपकण्ठ (ámsoṭpakanṭha) *n.* proximity of the shoulder अंसोपकण्ठे हस्ताभ्यां कपित्थस्तु श्रियः करः AbhinDa. 208; अंसोपकण्ठे हस्ताभ्यामलपञ्चकपित्थकः । धृतो यदि करो ह्येष दिवाकरकरः स्मृतः AbhinDa. 250.

अंसोपान्त (ámsoṭpānta) *n.* the edge or vicinity of the shoulder तव...अंसोपान्तविलम्बिनः...मूर्धजाः MattaVi. 6.

अंस्य (ámśya) *adj.* found on the shoulder, sticking to the shoulder(?) ये अंस्या ये अङ्ग्याः सूचीका ये...सर्वे साकं नि जस्यत Rv. i. 191. 7.

अंह (ámh-) [of IE origin from which are derived *ámhas* 'oppression, anxiety, trouble', *ámhu* 'narrow', *ámhati* 'trouble'. cf. MAYR. Pok. p. 42. s. v. *angh-*]

अंह (ámh-) i. a. [अहि गतौ DhātuPā. 1. 666; अंहि SaraKāṇṭhā(Gr.) ii. 1. 157; अहिङ् गते KaviKaDru. 344; DhātuVr. records the forms अंहते, आनंहे, अंहिता, अंहिषते, अंहयति, अंहिहत् and the noun अंहस्; used mostly in Dhātukāvyas] to go, to proceed आनंहिरेऽर्दि प्रति चित्रकूटम् Bhaṭṭi. 3. 46; 3. 25; 4. 4; 14. 51; 22. 17; नभोविहरणीं लब्धि प्राप्य तौ सुतपोधनौ । आ(?) अंहिषातां जगन्मान्यां जिनतीर्थोभिपूजिताम् PadmP. (Ra.) 39. 175; (causal) तमाञ्जिहन्मैथिलयज्ञभूमिम् Bhaṭṭi. 2. 40; युद्धोन्मत्तं च मत्तं च राजा रक्षार्थमाञ्जिहत् Bhaṭṭi. 15. 75.

अंह (ámh-) x. u. [चुरादौ भाषार्थः (v. l. भाषार्थः) DhātuPā. x. 212-242 (as v. l.) अहिक् भासे KaviKaDru. 344] to speak or to shine [L] अहि...महि इत्येते पञ्चदश स्वामिकाश्यपानुसारेण लिख्यन्ते DhātuVr. x. 196.

अंहःखनक (ámhaḥ-khanaka) *adj.* [f. -i] the destroyer of sins अंहःखनक्याः श्रीदेव्याः DvyāśraKā. 11. 37.

अंहःपरिमृज (ámhaḥ-parimṛj) *adj.* wiping away the sins समस्या वा सान्नां बहिरुहिरंहरःपरिमृजामृचां वा संवादः...त्वदाशीर्वादोऽयम् AnarghaRā. 3. 18.

अंहःप्रचार (ámhaḥ-pracāra) *m.* prevalence or occurrence of sin एतेन...धानिताहःप्रचारः DvyāśraKā. 8. 6.

अंहःप्रवपण (ámhaḥ-pravapaṇa) *adj.* the sower of sins परिकोपणम-प्रकोपनोऽर्थाहःप्रवपणदुष्प्रेरणं सहे चेत् । अवनिरवश्यं प्रगोपणीया कथमिव तर्हि मया प्रगोपनीया DvyāśraKā. 4. 26.

अंहति (ámh-ati) *f.* [DEBR. IE word from a root *ámh-* not traceable in IA; MAYR. from **ámhá-*, the *a* remains unexplained / अंहतिश्चांहश्चाहुश्च हन्तेः । निरूढोपधात् । विपरीतात् Nir. 4. 25. later grammarians take up this derivation for 2 *ámhati* 'gift'] distress, misery, danger, trouble (mostly physical in nature) नैनमश्नोत्यंहतिः Rv. i. 94. 2; यूयमसान्नयत् वस्यो अच्छा निरंहतिभ्यो मरुतो गृणानाः Rv. v. 55. 10; मित्रो नो अत्यंहति वरुणः पर्वदर्यमा Rv. viii. 67. 2; viii. 67. 21; मा नः समस्य दूढ्युः परिद्वेषो अंहतिः । कुर्मिर्न नावुना वधीत् Rv. viii. 75. 9 = MaiS. iv. 11. 6; TaiS. II. vi. 11. 2; Nir. 5. 23; later Kośas give the meaning रोग, व्याधि or उपद्रव 'disease, trouble' AnekāSam. 3. 233; MediK. 6. 3. 86; NānārthāSam. ii. 59. 143; KśāKaTa. 2. 5553; ŚabdaRaSaK. 137. 7; LaŚabdeSe. ii. 174. 7.

अंहति (ámh-ati) *f.* [mostly known to L. हन्तेरंह च Uṇā. 4. 62; included in the *bahvādigāṇa* on P. iv. 1. 45 (which optionally enjoins डीष्);

JaineVyā. iii. 1. 31; हन्ति दुरितमनया अंहतिर्दानम् SiddhāKau. 551A. 12] gift तन्यात् सिद्धश्च प्रियङ्गुरुचिरंहतिम् Caturviniśatikā of Bappabhaṭṭi 73; राजाधिराजविहरो राजराजसमाहतिः EI. xiv. 344. 74; iv. 15. 104; xii. 173. 94; flesh, evil omen AmaK. 1412; AbhidhāRāMā. 2. 264; NāmaMāli. 385; Vaija. 92. 119; AbhidhāCi. 387; KalpaK. 79. 100; ParyāŚaRa. 2. 226; AnekāSam. 3. 233; NānārthāSam. ii. 59. 143; MediK. 63. 86; NānārthāSam. 48. 16; way, time, chariot हन्ति हन्यते वा अंहतिः । पन्थाः कालो रथश्च Prasā. ii. 605. 21; *m.* snake-killer (अहिवानुक) NānārthāSam. ii. 59. 143.

अंहतिवैभव (ámhati-vaibhava) *n.* glory of liberality अपत्रपामंहति-वैभवेन सुरद्रुमाणामपि सूत्रयन्तः Acyutarā. 1. 22.

अंहतिशौण्ड (ámhati-śaunḍa) *adj.* gallant in liberality भीषणवैरि-विखण्डनचण्डः शेषमहाभरहृद्दण्डः पूषजदपहदंहतिशौण्डः EI. iii. 154. 81.

[**अंहती** (ámh-ati) *f.* = **अंहति** KāśiVr. on P. iv. 1. 45.]

अंहन (ámh-ana) *n.* [L] the act of crawling, gliding on the ribs निर्याणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः Vaija. 193. 13.

अंहश्छिदुर (ámhaś-chidura) *adj.* [f. -ā] destroyer of sins, remover of sins त्वन्नन्दनस्यास्य पुराणि मातर्न न्यूनमंहच्छिदुरेऽस्ति किञ्चित् DvyāśraKā. 10. 85.

अंहश्छेद (ámhaś-cheda) *m.* destruction or removal of sins रजोऽप्यस्य गिरेः पुंसामंहश्छेदाय जायते DvyāśraKā. 15. 64.

अंहस् (ámh-as) *n.* [from IE root *angh-* Pok. / from *ham-*, Nir. 4. 25; from *am-* Uṇā. 4. 212 (TattvBo. अमन्ति गच्छन्त्यनेनाधस्तादित्यहो दुरितम्); from *am-* Uṇā. (He.) 962, and from *ámh-* 952 comm. on ŚabdaBhePra. (Ma.) 1. 120; स्यान्मध्योष्मचतुर्थत्वमंहसो रंहसस्तथा ŚabdaBhePra. (Ma.) 1. 120; TaiPrāti. 8. 23 points out that the *visarga* of *ámhasaḥ* changes to *s* before *k*, *kh* and *p* (in the Tai. school), and 11. 4 notes the absence of the loss of the initial *a* (of *ámhasaḥ*) after *e* and *o*; Loc. pl. *ámhasu* AV. vi. 35. 2; *ámhaḥ* (RV. vi. 3. 1) is regarded as Acc. sg. with Abl. force (RENOU), Abl. sg. of *ámh* (GRASS) (against accent), or Abl. sg. without case ending, (BERG., OLD.); or for *ámhasā* (AUFR.)] **1 A** narrowness, oppression, distress, calamity (caused by various agencies, earthly and heavenly) पृथिवी नः पार्थिवत्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वंहसो Rv. vii. 104. 23 = AV. viii. 4. 23; (caused by gods or by mortals) न तमंहो देवकृतं कृतंश्च न मर्त्यकृतं नशत् Rv. viii. 19. 6; यो नो...मर्तो वृथाय दार्शति । तस्मान्नः पात्वंहसः Rv. vi. 16. 31; (caused by friends, by strangers, or haters and enemies) पात्पतिर्जन्त्यादंहसो नो मित्रो मित्रिवाद्दुत न उरुष्येत् Rv. iv. 55. 5; AV. ii. 28. 1; द्विषो नः पात्वंहसो विवक्षसे Rv. x. 24. 3; vi. 2. 11; x. 25. 8;... आङ्घ्रिरो द्विषतां पात्वंहसः Rv. x. 164. 4; AV. vi. 45. 3; नैनमंहः परि वरद्व्यायोः Rv. iv. 2. 9; त्वं नः पात्वंहसो दोषावस्तरघायुतः Rv. vii. 15. 15; (caused by agencies indicated in general terms) न तमंहो न दुरितं कृतंश्च नारातय-स्तितरुर्न द्र्याविनः Rv. ii. 23. 5; vii. 82. 7; x. 39. 11; न हन्यते न जीयते त्वोतो नैनमंहो अश्वेत्यन्तितो न दूरात् Rv. iii. 59. 2 = TaiS. III. iv. 11. 5; दामेव वृत्सादि मुमुग्ध्यहः Rv. ii. 28. 6; iv. 12. 6 = x. 126. 8; अति स्वसेम वृजुनं नाहः Rv. vi. 11. 6; य क्रक्षादंहसो मुच्यो वार्यात् सप्त सिन्धुषु Rv. viii. 24. 27 ऋषिं नरावंहसः पाञ्चजन्यमूवीसादत्रि मुञ्चथो गुणेन Rv. i. 117. 3; निरंहस्सतमसः स्पर्तमन्त्रिम् Rv. vii. 71. 5; आरे अस्सदमतिमारे अहं आरे विश्वां दुर्मति यन्निपासि Rv. iv. 11. 6; नाहो मर्तं नशते न प्रद्वृषिः Rv. vi. 3. 2; एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुञ्चतो अंहसः AV. viii. 2. 18; यद्...अनृतं किं चोदिम । आपो मा तस्मात्सर्वेसाद्दुरितात्पात्वंहसः AV. x. 5. 22; इदं यत्कुण्डः शुक्रनिर्मिन्निपतत्र पीपतत् । आपो मा तस्मात्सर्वेसाद्दुरितात्पात्वंहसः AV. vii. 64. 1; वातं प्राणं मनसाऽन्वारंभामहे । प्रजापति यो सुर्वेनस्य गोपाः । स नो मृत्योःखायतुं पात्वंहसः TaiBr. III. vii. 7. 2 = ĀpaSS. x. 8. 9; स एतदप एव मुञ्चति न प्रजामंहोमुचः स्वाहाकृता इत्यंहस इव ह्येता मुञ्चन्ति यदुदरे गुणितं भवति तस्मादाहाहोमुच इति ŚatBr. III. ii. 2. 20; protection or release from *ámhas* is sought from various deities, deified objects, animals and birds : Prthivi and Antarikṣa (RV. vii. 104. 23); Agni (RV. vii. 15. 15); Āpaḥ देवीस्ता (i. e. आपः) नो मुञ्चन्त्वंहसः AV. xiv. 2. 45; (AV. vii. 64. 1; x. 5. 22); Indra (RV. x. 24. 3); Jātavedas Rv. vi. 16. 31; Mitra (AV. ii. 28. 1); Soma नृन्स्तोवृन् पात्वंहसः Rv. ix. 56. 4; पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः AV. vi. 3. 2; Pūṣan सं पूषन्ध्वनस्तिर व्यहो विमुचो नपात् Rv. i. 42. 1; Maruts ययां रुधं पारयथात्यहो...। अर्वाची सा मरुतो या व ऊतिः...जिगातु Rv. ii. 34. 15; Ośadhis या ओषधयः...ता नो मुञ्चन्त्वंहसः AV. vi. 96. 1; viii. 7. 13; rice and barley एतौ (i. e. व्रीहियवौ) मुञ्चतो अंहसः AV. viii. 2. 18; amulets (*mani*) अयं नो विश्वभेषजो जङ्घिडः पात्वंहसः AV. ii. 4. 3; स नो हिरण्यजाः